प्रो0 मेघनाद साहा

"एक देशभक्त वैज्ञानिक"

लेखक : संतोष कुमार गुप्ता

सूत्रधार –

नमस्कार दोस्तों। कल्पना जो ना कराये। कल्पना एक ऐसी शक्ति है जिसमें संभवतः दैवीय रचनात्मक होती है। एक वैज्ञानिक की सबसे बड़ी ताकत है उसकी कल्पना शक्ति। कलाम साहब कहते हैं न–ड्रीम, ड्रीम, ड्रीम..... तो हमारी आज की यह प्रस्तुति भी एक कल्पना पर आधारित है।

विज्ञान एक जटिल विषय है। लेकिन जटिल होते हुए भी यह जीवन को सरल बनाता है। परन्तु यह सरलीकरण ऐसे ही संभव नहीं होता है। वैज्ञानिकों की वर्षों की अनवरत साधना का परिणाम होता है यह सरलीकरण। वैज्ञानिक विज्ञान रूपी समुद्र के मंथन से आम जीवन को सरल बनाने वाले उपकरणों का आविष्कार करते हैं।

भारत देश में ऐसे ही एक महान वैज्ञानिक हुए – प्रो0 मेघनाद साहा। प्रो0 साहा 06 अक्टूबर 1893 में ढ़ाका जिले के शेवड़ाताली गाँव में पैदा हुए थे। पिता जगन्नाथ साहा और माता भुवनेश्वरी देवी की ये पांचवीं संतान थे। गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान थे प्रो0 साहा।

हम अपने इस मंचन के माध्यम से आपको प्रो0 साहा के वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, राष्ट्रीय प्रेम, सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं की मनोरंजक ढ़ंग से झलक दिखाने का प्रयास करेगें। प्रो0 साहा केवल विज्ञान की प्रयोगशाला में घुसे रहने वाले वैज्ञानिक नहीं थे बल्कि आम–जन जीवन की प्रयोगशाला के भी सफल वैज्ञानिक थे। चुनौतियों के आगमन की प्रतीक्षा में खडे रहकर समय नहीं गंवाते थे बल्कि विपत्तियों को ललकार कर आमंत्रित करते थे और फिर उनके निदान को भी ढूंढ लाते थे।

प्रो0 साहब ऐसे हैं जैसे पारस पत्थर। जीवन के किसी भी आयाम को उन्होंने छुआ तो उसे कंचन बना दिया। राजनीति के दलदल में कमल सम समादृत प्रो0 साहा का जीवन किसी अजूबे से कम नहीं।

तो प्रो0 साहा साहब अब हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन जब साहा साहब मौजूद थे तक एक और शख्स आया था धरती पर। यद्यपि यह व्यक्ति अभी 2020 में भी आया था धरती पर। आप सब उसे देखेगें तो पहचान लेगें। आज हम उसी के माध्यम से प्रो0 साहा को जानने की कोशिश करेगें।

(इतने में पी के मंच पर दिखाई देता है।)

पीके– ई...गोला का लोग लगता है हमारे गोले का पता लगा लिया है। काहे की हमरा गोला पर इस गोले से कुछ सिगनल मिला है। अब कौन बतायेगा कि ई सिगनल ई सब कैसे भेजा।

((इतने में पीके एक पान वाले को देखता है कि सब लोग एक जगह से कुछ लेकर खा रहा है और खाते ही सब का मुंह लाल हो जा रहा है। पीके यें सब देखकर चौंकता है।)

पनवाडी– पान खाये सईयां हमार हो,

सांवली सुरतिया होंठ लाल–लाल। हो..पान खाये सईंया हमार हो।

पीके–जरूर ई भाई साहब कोई साइन्टिस्ट है। काहे कि ई भाई साहब बडकी देर से एकै जगह बइठा है। लगता है काफी ज्ञानी भी है। काहे कि काफी सारा लोग इनसे कुछ लेके जा रहा है खा रहा है और फिर थूक दे रहा है। जरूर ई भाई साहब ने कोई सफल एक्सपेरिमेंट कर लिया है। तभी तो देखों ना लोग हरा–हरा खाता है और लाल–लाल थूकता है।

पीके–(पनवाडी के पास पहुंचकर) अरे भाई साहब एक हमको भी अपना एक्सपेरिमेंट दीजियेगा।

पनवाडी– आंय...एक्सपेरिमेंट....कैसा एक्सपेरिमेंट । ओहो ये पान । तो अइसे बताइये ना। कइसा खायेगें मीठा की जर्दा।

पीके–हमका तो जो हरा हरा खाओ और लाल हो जाता है उ वाला खिलाव....

पन– आंय ई कौन सा पान मांग रहे हो बाबू।

पीके– वही जो सबको दे रहे हो। मुंह में डालते ही लाल हो जा रहा है।

पनवाडी– अच्छा होंठ लाल हो जाये। एकदम बाबू वैसा ही पान खिलायेगें। (पान बांधने का अभिनय करता है फिर एक पान देते हुए) ई लेवो बाबू ...

पीके पान लेता है और उसे खाता है। पान का स्वाद उसको बहुत पसंद आता है। लेकिन उसका होंठ लाल नहीं होता है।

पीके–ई का भाया हमरा मुंह तो लाल नहीं हुआ।

पनवाडी– अरे तो ई चूना और खाईये तब न लाल होगा।

पीके– का कहते हो भाया, सफेद खाने से लाल हो जायेगा।

पनवाडी– एकदम ...खाके तो देखिये।

पीके चूना खाने का अभिनय करता है और फिर खुशी से

पीके– वाह भाया तुम तो गजबै साइन्टिस्ट हो। कमाल का आविष्कार है तुम्हारा। खाया सफेद हो गया लाल। थोडा उसके पास आकर ...एक बात बताओ भाया का तुमही हमरा गोला पर सिग्नल भेजा था।

पनवाडी– पीके को थोड़ा अचरज से देखते हुए...का कहना चाहते हो बाबू तुम। सब नल बोल्ट तो ठीक है ना तुम्हारा। कुछ खिसका तो नही है।

पीके–मतबल...

पनवाडी– मतलब ई की कौन सा सिगनल। कैसा सिगनल। और कौन सा गोला।

पीके–सिगनल भाया। वो सिगनल यहीं कहीं से भेजा गया था। उहां दूर आसमान में वो सिगनल हमका मिला था।

पनवाडी– सिगनल ....अच्छा सिगनल। इसके बारे में तुम्हें एक ही आदमी बता सकता है। उ इश्कविद्यालय में पढ़ाते है ...अरे का नाम है उनका ...हां उ साइनिस्ट हैं। सब उनका प्रोफेसर....प्रोफेसर कहते हैं। साहा हां प्रो0 साहा।

पीके–खुश होते हुए...कहां मिलेगें....प्रो0 साहा.....

पनवाडी– ई जो बडा सा गेट है इसमें जाओ। यही के अन्दर मिलेगें।

पीके– ईहां ...ई जो बड़ा सा गेटवा लगा है ईमां...

पनवाडी– हां बाबू....ईमां...जाओ अब हमार दिमाग ना खाओ।

पीके– दिमाग...का वहू खाये से लाल हो जाई...

पनवाडी– भक्क ससुरा। रूक अबहीं बताई तोहका...

पीके भागता है और एक लड़की को लाल कपड़ा पहने देखता है।

पीके–ओहो ....आपको तो लोग बहुतये चूना लगाये हैं।

लड़की– हाँ... पर.... तुम्हें कैसे पता...

पीके– तबहीं तो लाल होई गवा है...

लड़की– बेवकूफ लाल तो हम कपड़ा पहने हैं।

सब दौडाते है पीके भागता है।

पीके–ई गोला पर सब भयंकर साइन्टिस्ट हैं। लगता है हमरा गोले से ज्यादा एडवान्स टेक्नालॉजी है ईहां। पर उ सिग्नलवा कहां से भेजा गया था। किससे पूछे। हां उ जेन्टलमैन आ रहे हैं उनसे पूछता हूँ

एक व्यक्ति के पास जाकर उनसे पूछता है।

पीके –भाया का तुम साइन्टिस्ट हो।

व्यक्ति–नहीं लेकिन हमारे यहां एक साइन्टिस्ट हैं प्रो0 मेघनाद साहा। उनकी ख्याति पूरी दुनिया में है।

पीके–हां उही प्रो0 साहब से हमका मिलना है।

व्यक्ति–इस समय तो प्रो0 साहा नहीं मिल सकते क्योंकि वे इस समय अपने रिसर्च के काम से यूरोप गये हैं।

पीके– तो भाया हमको कैसे पता चलेगा उ सिगनल हमरा गोला पर किसने भेजा था?

व्यक्ति–कैसा सिगनल और किस गोले की बात कर रहे हो तुम?

पीके–ऊ गोला...(ऊपर अंगुली करक दिखाता है) उहां हमका ई गोला से भेजा गया एक सिगनल मिला था।

व्यक्ति– तब तो वह सिगनल प्रो0 साहा के लैब से ही गया होगा। क्यों कि प्रो0 साहब इस समय आइन्स्टाइन के 'आपेक्षिक सिद्धान्त' की पुष्टि के लिए सूर्य की उष्मा का अध्ययन कर रहे हैं। और इसके लिए उन्होंने 'तापीय आयनन' सिद्धान्त की स्थापना की है।

पीके– ई का है भाया...

व्यक्ति–इस सिद्धान्त से प्रो0 साहा किसी भी तारे में उपस्थित तत्व का पता लगा सकते हैं। साथ ही इस सिद्धान्त से यह गणना भी की जा सकती है कि विभिन्न तारों में तत्व आयनन किस अवस्था में है।

पीके– सच में भाया ...ये तो कमाल का सिद्धान्त खोजा है प्रो0 साहब ने। हमका उनसे मिलना है भाया। ई बहुते जरूरी है।

व्यक्ति–फिर तो तुम्हें कलकत्ता जाना होगा। क्योंकि प्रो0 साहब यूरोप से वहीं आयेगें।

सूत्रधार– ये तो प्रो0 साहब के जीवन का वैज्ञानिक पक्ष है। लेकिन प्रो0 साहब केवल विज्ञान की सीमा में आवृत व्यक्तित्व नहीं थे। सामाजिक जीवन की प्रयोगशाला के भी सफल वैज्ञानिक थे प्रो0 साहब।

सामाजिक जीवन के प्रति भी उनका स्पष्ट नजरिया था। ये दौर आजादी के लिए छटपटाहट से भरे युवाओं और क्रान्तिकारियों का था। पूरे देश में अनेकों राष्ट्रीय शक्तियां अपने–अपने तरीके से आजादी के लिए संघर्षरत थी। प्रो0 साहा का राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग ले रहे व्यक्तियों से गहरा जुड़ाव था।

उनकी राष्ट्रीय भावना का पता केवल इस बात से चलता है कि उन्होंने कभी किसी यूरोपीय यूनिवर्सिटी में कोई पद नहीं ग्रहण किया। इग्लैण्ड की रायल सोसायटी की सदस्यता के अतिरिक्त उन्होंने कोई विदेशी डिग्री या सम्मान नहीं स्वीकार किया। जानते हैं मित्रों जब प्रो0 साहब रायल सोसायटी के सदस्य चुने गये तब वे केवल 33 वर्ष के युवा थे।

पीके– ई का ...हम ईहां कलकत्ता में जौन प्रो0 साहब से मिला ऊ तो क्रान्तिकारी हैं। भला साइन्टिस्ट का क्रान्ति से का लेना देना। लगता है हम गलत आदमी से मिल लिया हूं। (एक व्यक्ति को पीके रोकता है) अरे भाया हमका प्रो0 मेघनाद साहा से मिलना रहा।

व्यक्ति–क्या काम है तुम्हें प्रो0 साहब से ...?

पीके–बहुतये जरूरी काम रहा भाया..

व्यक्ति–तो तुम सामने ही तो हो उनके घर के। अन्दर जाओ और मिल लो।

पीके–ई घर मां ...ई मां तो कौनउ क्रान्तिकारी साहब रहत हैं। उनसे मिला हम। उ तो विज्ञान की बात नाहीं करते। हमका साइन्टिस्ट प्रो0 साहा से मिलना है।

व्यक्ति–अरे तो यही साइन्टिस्ट प्रो0 साहा साहब हैं।

पीके– तो ई साइन्टिस्ट हैं कि क्रान्तिकारी है?

व्यक्ति–अच्छा अब समझा मैं तुम्हारी परेशानी को। देखों भाई प्रो0 साहब हैं तो साइन्टिस्ट लेकिन उनका कहना है कि विदेशी शासन के अन्तर्गत वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा शिक्षा का विस्तार कर सकना संभव नहीं है। इसीलिए अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए संघर्ष करते क्रान्तिारी हैं प्रो साहब।

पीके– अच्छा, तो प्रो0 साहब अपनी प्रयोगशाला में अब काम नाहीं करत हैं?

व्यक्ति–ऐसा नहीं है। अपनी प्रयोगशाला में भी काम करते है। अपने विद्यार्थियों को लगातार वैज्ञानिक प्रयोगों और अनुसंधानों का निर्देश देते रहते हैं।

पीके– हम तो बहुतये कन्फ्यूजिया गया हूँ। प्रो0 साहब साइन्टिस्ट वाला कमवा भी कर रहे हैं और ई गोरा लोगन से आजादी खातिर लड भी रहे हैं। ई दुइनों काम कैसे संभव है।

व्यक्ति– प्रो0 साहब का व्यक्तिव ही अनूठा है। विशुद्ध विज्ञान तक सीमित अनुसंधान को वे ठीक नहीं मानते बल्कि प्रो0 साहा ऐसे विज्ञान के पक्षधर थे जो आम जनता के काम आ सके। विज्ञान के माध्यम से आम आदमी की सेवा करना उनका दुःख दर्द कम करना उनका खास मकसद था।

पीके– वाह भाया। तुमने प्रो0 साहब के बारे में ई सब बता के बड़ा उपकार किया हमरा। अब हम भी अपना गोला पर प्रो0 साहब का ई सब विचारन के बारे में सबका बताऊँगा। धन्यवाद भाया....